International Journal of Emerging Voices in Education
Volume 2 | Issue 7 | July 2026 | ISSN: 3107-958X (Online)
Available online at: https://ijeve.com/
DOI: https://doi.org/10.59828/ijeve.v2i7.70

महात्मा गांधी की शिक्षा-दृष्टि से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तक: समग्र एवं अनुभवात्मक शिक्षा की बदलती अवधारणा

विनोद कुमार मिश्रा[1], डॉ.लोहंस कुमार कल्याणी[2]

[1] शोधार्थी, शिक्षक शिक्षा विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोण्डा

[1]Email: vkm.Mishra992@gmail.com

[2]शोध निर्देशक, असिस्टेंट प्रोफेसर, शिक्षक शिक्षा विभाग, श्री लाल बहादुर शास्त्री डिग्री कॉलेज, गोण्डा

[2]Email: lohanskalyani@gmail.com

Received: 06 July 2026 | **Accepted:** 20 July 2026 | **Published:** 30 July 2026

Abstract (सारांश)

भारतीय शिक्षा-विमर्श में महात्मा गांधी की नई तालीम और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 दो अलग ऐतिहासिक कालखंडों की शैक्षिक दृष्टियाँ हैं, फिर भी दोनों के बीच महत्त्वपूर्ण वैचारिक संवाद दिखाई देते हैं। गांधी ने शिक्षा को केवल साक्षरता अथवा रोजगार की तैयारी न मानकर शरीर, मन और आत्मा के संतुलित विकास, चरित्र-निर्माण, श्रम की प्रतिष्ठा, स्वावलंबन, मातृभाषा, सामाजिक उत्तरदायित्व तथा जीवन से जुड़ी सीखने की प्रक्रिया के रूप में देखा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी रटने पर आधारित अधिगम से आगे बढ़कर समग्र विकास, अनुभवात्मक अधिगम, बहुविषयकता, कौशल, कला एवं खेल-समेकित शिक्षण, स्थानीय ज्ञान, भारतीय भाषाओं, नैतिक एवं संवैधानिक मूल्यों तथा व्यावसायिक शिक्षा पर बल देती है। प्रस्तुत लेख दस्तावेजीय एवं व्याख्यात्मक पद्धति पर आधारित है और यह स्पष्ट करता है कि कार्य द्वारा सीखना, ज्ञान और जीवन का संबंध, स्थानीयता, स्वावलंबन, मूल्य-शिक्षा और शिक्षार्थी का बहुआयामी विकास दोनों दृष्टियों को जोड़ते हैं; किंतु डिजिटल साक्षरता, वैश्विक दक्षताओं, लचीले पाठ्यक्रम और बहुविषयक उच्च शिक्षा जैसे क्षेत्र NEP 2020 की समकालीन आवश्यकताओं को व्यक्त करते हैं।

मुख्य शब्द: *महात्मा गांधी, नई तालीम, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, समग्र शिक्षा, अनुभवात्मक अधिगम, कार्य-आधारित शिक्षा, मातृभाषा, मूल्य शिक्षा, कौशल शिक्षा, स्वावलंबन*

1. प्रस्तावना

शिक्षा का स्वरूप किसी समाज की मनुष्य, ज्ञान, श्रम और भविष्य के प्रति धारणा को प्रकट करता है। भारत में औपनिवेशिक शिक्षा के विकास ने आधुनिक संस्थागत शिक्षा को संरचना दी, पर यह प्रश्न बना रहा कि क्या शिक्षा स्थानीय जीवन, समुदाय, उत्पादन, भाषा और संस्कृति से पर्याप्त रूप से संबद्ध है। महात्मा गांधी ने इसी प्रश्न को मूलभूत रूप में उठाया। उनके लिए शिक्षा का लक्ष्य पुस्तकीय ज्ञान का संचय नहीं, बल्कि बालक की शारीरिक, बौद्धिक, नैतिक और आध्यात्मिक शक्तियों का समन्वित विकास था। नई तालीम इसी व्यापक दृष्टि का व्यावहारिक रूप थी।

इक्कीसवीं शताब्दी में ज्ञान-अर्थव्यवस्था, डिजिटल तकनीक, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, जलवायु संकट, वैश्वीकरण, बदलते रोजगार और सामाजिक विविधता ने शिक्षा से अपेक्षाएँ बढ़ाई हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भारतीय शिक्षा को समग्र, लचीला, बहुविषयक, कौशलोन्मुख और अनुभव-आधारित बनाने की दिशा प्रस्तुत करती है। नीति रटने की संस्कृति से हटकर वास्तविक समझ, सीखना कैसे सीखें, आलोचनात्मक चिंतन, सृजनात्मकता और अनुभवात्मक अधिगम की बात करती है। कला, खेल, शिल्प और व्यावसायिक कौशल तथा अकादमिक विषयों के बीच कठोर विभाजन कम करने का प्रस्ताव इसी दिशा का संकेत है (Ministry of Education, 2020)।

गांधी और NEP 2020 को एक-दूसरे का प्रतिरूप मानना ऐतिहासिक जटिलताओं को कम कर देगा। गांधी की नई तालीम औपनिवेशिक भारत, ग्राम-केंद्रित अर्थव्यवस्था, स्वराज और सामाजिक पुनर्निर्माण की पृष्ठभूमि में विकसित हुई; जबकि NEP 2020 लोकतांत्रिक, तकनीकी,

This is an open access article under the Creative Commons Attribution-Non-Commercial 4.0 International License.
© The Author(s) 2026. IJEVE Published by Surya Multidisciplinary Publication.

वैश्विक और अत्यधिक विविध भारत के लिए नीति-ढाँचा है। अतः अधिक उपयोगी प्रश्न यह है कि गांधी द्वारा प्रतिपादित जीवन से शिक्षा का सिद्धांत आज किस रूप में पुनर्परिभाषित हुआ है।

2. अध्ययन के उद्देश्य एवं पद्धति

यह लेख वैचारिक, दस्तावेजीय और विश्लेषणात्मक प्रकृति का है। इसके उद्देश्य हैं—गांधी की शिक्षा-दृष्टि में समग्रता और अनुभव के स्थान को स्पष्ट करना; NEP 2020 में समग्र एवं अनुभवात्मक शिक्षा से संबंधित प्रमुख प्रावधानों का विश्लेषण करना; तथा दोनों के बीच निरंतरता, परिवर्तन और समकालीन पुनर्व्याख्या के बिंदुओं की पहचान करना। अध्ययन के लिए गांधी के नई तालीम, बुनियादी शिक्षा, श्रम, भाषा, चरित्र और स्वावलंबन से जुड़े प्रकाशित विचारों तथा भारत सरकार की राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को प्राथमिक आधार बनाया गया है। विश्लेषण की श्रेणियाँ हैं—समग्र विकास, कार्य एवं अनुभव, ज्ञान की एकीकृत प्रकृति, मातृभाषा, कौशल एवं स्वावलंबन, मूल्य एवं सामाजिक उत्तरदायित्व, शिक्षक की भूमिका और मूल्यांकन। लेख यह कारणात्मक दावा नहीं करता कि NEP 2020 के प्रत्येक संबंधित प्रावधान का प्रत्यक्ष स्रोत गांधी हैं; इसके स्थान पर वैचारिक साम्य और रूपांतरण को विश्लेषण की इकाई माना गया है।

3. गांधी की शिक्षा-दृष्टि: जीवन का समग्र विकास

गांधी के शैक्षिक चिंतन का आधार यह विचार है कि शिक्षा मनुष्य में निहित श्रेष्ठ क्षमताओं का सर्वांगीण विकास करे। उन्होंने शरीर, मन और आत्मा के संतुलित विकास पर बल दिया और साक्षरता को शिक्षा का पर्याय मानने से इंकार किया। ज्ञान तभी सार्थक है जब वह व्यक्ति की समझ, व्यवहार, चरित्र, श्रम और सामाजिक संबंधों में व्यक्त हो।

गांधी की दृष्टि में समग्र शिक्षा का पहला पक्ष शरीर और बुद्धि का संबंध है। वे हाथ से किए जाने वाले उपयोगी कार्य को बौद्धिक विकास का विरोधी नहीं मानते थे। वैज्ञानिक ढंग से किया गया हस्तकार्य अवलोकन, तर्क, गणना, सौंदर्य-बोध, अनुशासन और समस्या-समाधान विकसित कर सकता है। दूसरा पक्ष ज्ञान और नैतिकता का संबंध है। शिक्षा का लक्ष्य केवल दक्ष व्यक्ति तैयार करना नहीं, बल्कि सत्य, अहिंसा, सहयोग, सेवा और उत्तरदायित्व जैसे मूल्यों से युक्त नागरिक बनाना था। तीसरा पक्ष विद्यालय और समुदाय का संबंध है। शिक्षा को स्थानीय जीवन, उत्पादन, प्रकृति और समाज से काटकर नहीं देखा जा सकता।

नई तालीम में शिल्प केवल हस्तकौशल नहीं था; वह शिक्षा का माध्यम बन सकता था। कताई, बुनाई, कृषि, बागवानी या बढ़ईगीरी से गणित, विज्ञान, भाषा, सामाजिक जीवन और अर्थशास्त्र के अनेक पक्ष जोड़े जा सकते हैं। इस प्रकार विषयों की कृत्रिम दीवारें कम होती हैं और विद्यार्थी ज्ञान को वास्तविक क्रिया में अनुभव करता है। गांधी ने मातृभाषा को भी शिक्षा की स्वाभाविक भूमि माना। स्वावलंबन का अर्थ उनके यहाँ केवल आर्थिक आत्मनिर्भरता नहीं, बल्कि श्रम का सम्मान, जीवनोपयोगी कौशल, आत्म-अनुशासन और समुदाय के प्रति उपयोगिता भी था।

4. नई तालीम में अनुभवात्मक अधिगम

आज experiential learning व्यापक शब्द है, किंतु नई तालीम में अनुभव का स्वरूप विशिष्ट था। यह केवल प्रयोगशाला, परियोजना या भ्रमण तक सीमित नहीं था। अनुभव का केंद्र उत्पादक, सामाजिक रूप से उपयोगी और अर्थपूर्ण कार्य था। विद्यार्थी किसी प्रक्रिया में भाग लेता, समस्या का सामना करता, त्रुटि से सीखता, कारण-परिणाम समझता और अपने कार्य के सामाजिक उपयोग को पहचानता। अनुभव ज्ञान का उदाहरण नहीं, ज्ञान तक पहुँचने का मार्ग बनता था।

नई तालीम की दूसरी विशेषता सहसंबंध थी। किसी केंद्रीय कार्य के आसपास विभिन्न विषयों को जोड़ा जाना था। कपास से सूत और सूत से कपड़े की प्रक्रिया में कृषि, जलवायु, मापन, अनुपात, स्थानीय अर्थव्यवस्था, इतिहास, भाषा और कला के प्रश्न सामने आ सकते हैं। यह दृष्टि आज की interdisciplinary और multidisciplinary शिक्षा से संवाद स्थापित करती है। तीसरा तत्त्व श्रम की गरिमा है। मानसिक श्रम को श्रेष्ठ और शारीरिक श्रम को निम्न मानने की प्रवृत्ति को गांधी ने शिक्षा के माध्यम से चुनौती दी। इस दृष्टि से अनुभवात्मक शिक्षा केवल pedagogical technique नहीं बल्कि सामाजिक दर्शन है।

चौथा तत्त्व आत्मनिर्भरता है। गांधी विद्यालय को यथासंभव उत्पादन से जोड़ना चाहते थे। इसके आर्थिक पक्ष पर ऐतिहासिक बहस हुई है, किंतु शैक्षिक संदेश आज भी महत्त्वपूर्ण है—विद्यार्थी को उपभोक्ता मात्र न बनाकर सृजनकर्ता बनाया जाए। आधुनिक संदर्भ में इसका विस्तार सामाजिक नवाचार, डिजाइन, डिजिटल निर्माण, पर्यावरणीय परियोजनाओं और सामुदायिक सेवा तक किया जा सकता है।

5. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में समग्र शिक्षा

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में holistic development विद्यालयी और उच्च शिक्षा दोनों का केंद्रीय विचार है। नीति के अनुसार शिक्षा का लक्ष्य केवल संज्ञानात्मक विकास नहीं, बल्कि चरित्र-निर्माण और ऐसे समग्र व्यक्तियों का विकास है जो इक्कीसवीं सदी की आवश्यक क्षमताओं से युक्त हों। विद्यालयी पाठ्यक्रम में कला, खेल, शिल्प और व्यावसायिक कौशल को मुख्य शिक्षण-अनुभव का हिस्सा बनाने की बात की गई है। नीति curricular, co-curricular और extra-curricular के कठोर विभाजन को कम करने तथा कला-विज्ञान और अकादमिक-व्यावसायिक धाराओं के बीच लचीलापन बढ़ाने पर बल देती है (Ministry of Education, 2020)।

यह समग्रता गांधी की शरीर-मन-चरित्र संबंधी अवधारणा से कई बिंदुओं पर मिलती है। दोनों में शिक्षा का उद्देश्य परीक्षा के अंक से व्यापक है। दोनों शिक्षार्थी की बहुआयामी क्षमताओं को महत्त्व देते हैं और कार्य, कला तथा जीवनोपयोगी गतिविधियों को शिक्षा से जोड़ते हैं। फिर भी NEP 2020 में समग्रता का दायरा डिजिटल साक्षरता, computational thinking, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, बहुविषयक उच्च शिक्षा और आधुनिक रोजगार-क्षमताओं तक फैला है। इसलिए इसे गांधीवादी दृष्टि की साधारण पुनरावृत्ति नहीं, बल्कि समकालीन विस्तार के रूप में पढ़ना अधिक उचित है।

नीति में विषय-चयन का लचीलापन ज्ञान की खंडित संरचना को कम कर सकता है। गांधी की नई तालीम भी विषयों को जीवन की गतिविधि से जोड़कर एकीकृत करती थी। अंतर यह है कि गांधी के यहाँ केंद्रीय उत्पादक शिल्प सहसंबंध का माध्यम था, जबकि NEP 2020 बहुविषयक विकल्प, परियोजनाएँ, कला-समेकन, खेल-समेकन और competency-based learning जैसे अनेक मार्ग प्रस्तुत करती है।

6. अनुभवात्मक अधिगम: नीति में विस्तार

NEP 2020 सभी चरणों में hands-on learning, arts-integrated और sports-integrated education, storytelling-based pedagogy तथा विषयों के बीच संबंधों की खोज को अनुभवात्मक अधिगम का हिस्सा मानती है। नीति शिक्षण को अधिक संवादात्मक, खोजपरक, सहयोगात्मक और आनंदपूर्ण बनाने तथा competency-based learning की ओर बढ़ने की बात करती है (Ministry of Education, 2020) ।

गांधी की नई तालीम से तुलना करने पर परिवर्तन स्पष्ट है। गांधी के लिए अनुभव प्रायः स्थानीय उत्पादन, श्रम और सामाजिक जीवन से उत्पन्न होता था। NEP 2020 में अनुभव की परिधि कला, खेल, प्रयोग, परियोजना, व्यावसायिक exposure, स्थानीय विशेषज्ञ, भ्रमण और तकनीकी माध्यम तक विस्तृत है। किंतु चुनौती यह है कि अनुभवात्मक शिक्षा केवल activity बनकर न रह जाए। यदि गतिविधि का वास्तविक समस्या, चिंतन, अवधारणा और पुनरावलोकन से संबंध नहीं है तो वह गहरे अधिगम में परिवर्तित नहीं होती।

उदाहरण के लिए केवल किचन गार्डन दिवस सीमित गतिविधि है; किंतु यदि विद्यार्थी मिट्टी की गुणवत्ता जाँचें, जल-उपयोग मापें, पौधों का अध्ययन करें, लागत का हिसाब रखें, पोषण पर डेटा एकत्र करें और समुदाय के साथ निष्कर्ष साझा करें, तो वही कार्य विज्ञान, गणित, स्वास्थ्य, पर्यावरण, भाषा और सामाजिक उत्तरदायित्व का एकीकृत अनुभव बन जाता है।

7. मातृभाषा, स्थानीयता और संस्कृति

गांधी ने मातृभाषा में शिक्षा को स्वाभाविक, लोकतांत्रिक और सांस्कृतिक रूप से आवश्यक माना। NEP 2020 भी जहाँ संभव हो कम-से-कम कक्षा 5 तक और वरीयतः कक्षा 8 तथा आगे तक घर की भाषा, मातृभाषा, स्थानीय या क्षेत्रीय भाषा को शिक्षण-माध्यम के रूप में प्रोत्साहित करती है तथा द्विभाषी शिक्षण-सामग्री पर बल देती है (Ministry of Education, 2020) ।

दोनों दृष्टियों में स्थानीयता का अर्थ संकीर्णता नहीं है। गांधी के लिए स्थानीय जीवन आत्मनिर्भरता और वास्तविक अनुभव का आधार था। NEP 2020 स्थानीय कला, संस्कृति, ज्ञान और विशेषज्ञता को पाठ्यक्रम से जोड़ने के साथ विद्यार्थियों को व्यापक राष्ट्रीय और वैश्विक संसार के लिए तैयार करना चाहती है। स्थानीय जल-स्रोत, लोककला, कृषि-पद्धति, शिल्प, बाजार, ऐतिहासिक स्थल या समुदाय की समस्या को सीखने का संसाधन बनाया जा सकता है और उसके विश्लेषण में आधुनिक विज्ञान तथा डिजिटल उपकरणों का उपयोग किया जा सकता है।

मातृभाषा अनुभवात्मक शिक्षा से भी जुड़ी है। विद्यार्थी जिस भाषा में सहज है, उसमें अनुभव का वर्णन, प्रश्न और अवधारणा-निर्माण अधिक स्वाभाविक हो सकता है। बहुभाषी कक्षा में समाधान किसी एक भाषा को थोपना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के भाषाई संसाधनों का शिक्षण में बुद्धिमत्तापूर्ण उपयोग है।

8. कौशल, व्यावसायिक शिक्षा और श्रम की प्रतिष्ठा

गांधी के चिंतन में कौशल का स्थान केंद्रीय था, पर कौशल को केवल रोजगार-योग्यता तक सीमित नहीं किया गया। उपयोगी कार्य आत्मसम्मान, अनुशासन, सहयोग, बौद्धिक जिज्ञासा और सामाजिक उपयोगिता विकसित कर सकता है। NEP 2020 भी व्यावसायिक शिक्षा और अकादमिक शिक्षा के बीच दूरी कम करने, व्यावसायिक exposure तथा स्थानीय विशेषज्ञों से सीखने पर बल देती है।

यदि व्यावसायिक शिक्षा केवल उन विद्यार्थियों के लिए मानी जाए जिन्हें अकादमिक शिक्षा में कमजोर समझा जाता है, तो पुराना पदानुक्रम बना रहेगा। इसके विपरीत प्रत्येक विद्यार्थी को निर्माण, मरम्मत, कृषि, डिजाइन, देखभाल, स्थानीय शिल्प, डिजिटल निर्माण या सामुदायिक सेवा जैसे कार्यों से परिचित कराना ज्ञान और श्रम के कृत्रिम विभाजन को कम कर सकता है।

समकालीन संदर्भ में स्वावलंबन का अर्थ वित्तीय साक्षरता, डिजिटल कौशल, उद्यमिता, समस्या-समाधान, सहयोग, संचार और सतत विकास से जुड़ी दक्षताओं तक विस्तृत है। गांधीवादी दृष्टि आधुनिक कौशलों के लिए नैतिक प्रश्न जोड़ती है कि कौशल किसके लिए और किस प्रकार के समाज के निर्माण के लिए है।

9. मूल्य, चरित्र और सामाजिक उत्तरदायित्व

गांधी की शिक्षा-दृष्टि में चरित्र-निर्माण मूल उद्देश्य था। सत्य, अहिंसा, आत्मसंयम, सेवा, सहयोग और श्रम के प्रति सम्मान व्यवहारिक मूल्य थे। मूल्य पाठ्यपुस्तक के अध्याय नहीं, विद्यालयी जीवन में जीने योग्य सिद्धांत थे। शिक्षक का आचरण, सामुदायिक कार्य, स्वच्छता और सामूहिक उत्तरदायित्व मूल्य-शिक्षा के माध्यम बनते थे।

NEP 2020 नैतिकता, संवैधानिक मूल्यों, सहानुभूति, स्वच्छता, लोकतांत्रिक भावना, सेवा, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, जिम्मेदारी और विविधता के सम्मान जैसी क्षमताओं को शिक्षा से जोड़ती है। आधुनिक लोकतांत्रिक संदर्भ में इसका संस्थागत आधार संविधान और समकालीन नागरिकता है। यह गांधी के नैतिक चिंतन से संवाद करता है, किंतु दोनों की वैचारिक पृष्ठभूमि समान नहीं है।

अनुभवात्मक मूल्य-शिक्षा का अर्थ यह है कि विद्यार्थियों को केवल सहयोग का पाठ न पढ़ाया जाए, बल्कि ऐसी वास्तविक स्थितियाँ दी जाएँ जहाँ सहयोग आवश्यक हो। जल संरक्षण, स्थानीय स्वच्छता, डिजिटल सहायता, समावेशी खेल, पुस्तक-साझाकरण या स्थानीय विरासत का दस्तावेजीकरण मूल्य और ज्ञान को एक साथ जोड़ सकते हैं।

10. शिक्षक की बदलती भूमिका

नई तालीम में शिक्षक को शिल्प की वैज्ञानिक समझ, विषयों के बीच सहसंबंध स्थापित करने की क्षमता, नैतिक विश्वसनीयता और समुदाय से जुड़ाव की आवश्यकता थी। वह केवल पाठ पढ़ाने वाला नहीं, बल्कि कार्य और जीवन के माध्यम से सीखने की परिस्थितियाँ बनाने वाला मार्गदर्शक था।

NEP 2020 भी शिक्षक को शिक्षा-सुधार के केंद्र में रखती है। अनुभवात्मक और बहुविषयक शिक्षा में शिक्षक का कार्य अधिक जटिल है। उसे प्रश्न तैयार करने, परियोजना डिजाइन करने, स्थानीय संसाधन पहचानने, विविध विद्यार्थियों को साथ लेने, तकनीक का विवेकपूर्ण उपयोग करने और सीखने की प्रक्रिया का मूल्यांकन करने की क्षमता चाहिए।

गांधीवादी दृष्टि शिक्षक को स्वयं श्रम और सीखने से जुड़े रहने का संदेश देती है। यदि शिक्षक हाथ से काम को निम्न समझता है तो श्रम की प्रतिष्ठा स्थापित नहीं हो सकती। यदि अनुभवात्मक शिक्षा केवल worksheet बन जाती है तो विद्यार्थी की खोज सीमित हो जाती है। शिक्षक को नियंत्रणकर्ता के बजाय सह-अन्वेषक बनना होगा।

11. मूल्यांकन की बदलती अवधारणा

यदि शिक्षा का लक्ष्य चरित्र, कौशल, सृजनात्मकता, सहयोग, समस्या-समाधान और वास्तविक जीवन में ज्ञान का उपयोग है, तो केवल लिखित परीक्षा पर्याप्त नहीं हो सकती। गांधी की नई तालीम कार्य-आधारित थी; सीखने का प्रमाण विद्यार्थी के कार्य, व्यवहार, कौशल और समझ में दिखाई देना था।

NEP 2020 competency-based assessment और assessment for, of तथा as learning की दिशा प्रस्तुत करती है। Portfolio, परियोजना, प्रदर्शन-आधारित कार्य, मौखिक प्रस्तुति, अवलोकन, self-assessment और peer-assessment उपयोगी हो सकते हैं, पर इनके लिए स्पष्ट मानदंड आवश्यक हैं। अनुभवात्मक मूल्यांकन में rubrics, प्रक्रिया का दस्तावेजीकरण और reflective account महत्त्वपूर्ण हैं।

सुंदर मॉडल बना देना हमेशा गहरी समझ का प्रमाण नहीं है। मूल्यांकन को देखना चाहिए कि विद्यार्थी ने समस्या कैसे पहचानी, जानकारी कैसे जुटाई, कौन-से निर्णय लिए, त्रुटि से क्या सीखा और निष्कर्ष को कैसे समझाया। इस प्रकार मूल्यांकन स्वयं सीखने की प्रक्रिया बन सकता है।

12. गांधी से NEP 2020 तक: निरंतरता और परिवर्तन

दोनों दृष्टियों के बीच छह प्रमुख वैचारिक संवाद दिखाई देते हैं—बहुआयामी विकास, सक्रिय एवं अनुभव-आधारित सीखना, ज्ञान को जीवन और स्थानीय संदर्भ से जोड़ना, कला-शिल्प-कौशल का सम्मान, मातृभाषा का महत्त्व और शिक्षा में मूल्य एवं सामाजिक उत्तरदायित्व।

परिवर्तन भी महत्त्वपूर्ण हैं। गांधी की नई तालीम ग्राम-केंद्रित और उत्पादक शिल्प-केंद्रित थी, जबकि NEP 2020 का शिक्षार्थी ग्रामीण या शहरी, स्थानीय और वैश्विक, भौतिक और डिजिटल—सभी संसारों में सक्रिय है। आत्मनिर्भरता आज डिजिटल क्षमता, नवाचार, उद्यमिता और वैश्विक ज्ञान तक पहुँच के साथ पुनर्परिभाषित होती है। समग्रता अब स्वास्थ्य और चरित्र के साथ सामाजिक-भावनात्मक दक्षताओं, वैज्ञानिक दृष्टिकोण, creativity, computational thinking और multidisciplinary learning को भी समाहित करती है।

इस यात्रा को सीधी रेखा की तरह नहीं देखा जाना चाहिए। यह उन मूल प्रश्नों की यात्रा है जो भारतीय शिक्षा में बार-बार उभरते हैं—शिक्षा किसके लिए है, ज्ञान और जीवन का संबंध क्या है, हाथ और मस्तिष्क के बीच विभाजन क्यों हो, स्थानीय अनुभव और वैश्विक ज्ञान का संतुलन कैसे बने, और शिक्षा व्यक्ति को केवल रोजगार के लिए तैयार करे या उत्तरदायी जीवन के लिए भी।

13. प्रस्तावित मॉडल: अनुभव–चिंतन–कौशल–मूल्य–समुदाय

गांधीवादी दृष्टि और NEP 2020 के तुलनात्मक अध्ययन से अनुभवात्मक शिक्षा का पाँच-घटक मॉडल प्रस्तावित किया जा सकता है—अनुभव, चिंतन, कौशल, मूल्य और समुदाय। अनुभव का अर्थ वास्तविक कार्य या समस्या से जुड़ना है। चिंतन उस अनुभव के कारण, प्रक्रिया, त्रुटि और परिणाम को समझना है। कौशल में हाथ, मस्तिष्क, भाषा, तकनीक और सहयोग की दक्षताएँ शामिल हैं। मूल्य यह प्रश्न उठाता है कि कार्य जिम्मेदार, टिकाऊ और मानवीय है या नहीं। समुदाय सीखने को वास्तविक सामाजिक संदर्भ और उपयोग से जोड़ता है।

उदाहरण के लिए स्थानीय जल संकट पर परियोजना में विद्यार्थी जल-स्रोतों का मानचित्रण कर सकते हैं, उपभोग और वर्षा के आँकड़ों का विश्लेषण कर सकते हैं, डिजिटल mapping और डेटा प्रस्तुति सीख सकते हैं, जल के न्यायपूर्ण उपयोग पर चर्चा कर सकते हैं और स्थानीय निकाय के साथ सुझाव साझा कर सकते हैं। इस प्रकार एक परियोजना विज्ञान, गणित, भूगोल, भाषा, डिजिटल साक्षरता और नागरिकता को जोड़ती है।

स्थानीय शिल्प पर परियोजना में विद्यार्थी कारीगरों का मौखिक इतिहास दर्ज करें, उत्पादन की गणित समझें, सामग्री के पर्यावरणीय प्रभाव का अध्ययन करें, उत्पाद का डिजाइन सुधारें और डिजिटल दस्तावेजीकरण करें। यहाँ गांधी का शिल्प आधुनिक design thinking और डिजिटल साक्षरता से संवाद करता है।

अनुभव	चिंतन	कौशल	मूल्य	समुदाय

प्रस्तावित प्रवाह: वास्तविक कार्य → अर्थ-निर्माण → दक्षता → उत्तरदायित्व → सामाजिक उपयोग

14. क्रियान्वयन की प्रमुख चुनौतियाँ

नीति और कक्षा के बीच दूरी बड़ी चुनौती है। पहली चुनौती शिक्षक-तैयारी है। बड़े वर्ग, समय-सारणी, परीक्षा-दबाव और सीमित संसाधनों के बीच परियोजना तथा अनुभव-आधारित शिक्षण कठिन हो सकता है। शिक्षक को स्थानीय गतिविधियों को learning outcomes से जोड़ने और उनका विश्वसनीय मूल्यांकन करने का प्रशिक्षण चाहिए।

दूसरी चुनौती activity without learning की है। यदि गतिविधियों में अवधारणात्मक उद्देश्य, प्रश्न, चिंतन और feedback स्पष्ट नहीं है तो उनका प्रभाव सीमित रहेगा। तीसरी चुनौती व्यावसायिक शिक्षा के सामाजिक दर्जे की है। जब तक हाथ के काम को अकादमिक विषयों से कम प्रतिष्ठित माना जाएगा, श्रम-सम्मान और vocational integration अधूरे रहेंगे।

चौथी चुनौती समानता की है। समृद्ध विद्यालय महंगे labs और makerspaces उपलब्ध करा सकते हैं, जबकि संसाधन-वंचित विद्यालयों के पास सीमित सुविधाएँ होती हैं। गांधीवादी दृष्टि सीखने के संसाधन समुदाय, स्थानीय पर्यावरण और दैनिक जीवन में खोजती है, इसलिए अनुभवात्मक शिक्षा को महंगी तकनीक का पर्याय नहीं बनाया जाना चाहिए। पाँचवीं चुनौती मूल्यांकन और प्रवेश परीक्षाओं की असंगति है। यदि कक्षा में सृजनात्मकता और अनुभव पर बल हो लेकिन उच्च-दाँव परीक्षाएँ स्मृति-आधारित रहें तो परीक्षा-केंद्रित व्यवहार बना रहेगा।

15. शैक्षिक निहितार्थ एवं सुझाव

अनुभवात्मक शिक्षा को अतिरिक्त गतिविधि नहीं, चयनित अवधारणाओं के लिए मुख्य शिक्षण-पद्धति के रूप में नियोजित किया जाना चाहिए। विद्यालय स्थानीय community learning resource map तैयार कर सकते हैं, जिसमें कारीगर, किसान, स्वास्थ्यकर्मी, कलाकार, पर्यावरणीय स्थल, संग्रहालय, स्थानीय उद्योग और सामाजिक संस्थाएँ शामिल हों। परियोजनाओं में reflection अनिवार्य किया जाए—विद्यार्थी बताए कि उसने क्या किया, क्या समझा, क्या कठिनाई आई और अगली बार क्या बदलेगा।

Vocational exposure सभी विद्यार्थियों के लिए गरिमापूर्ण और बौद्धिक रूप से चुनौतीपूर्ण हो। मातृभाषा और बहुभाषिकता को अनुभव साझा करने, स्थानीय ज्ञान एकत्र करने और समुदाय से संवाद में सक्रिय संसाधन बनाया जाए। शिक्षक-शिक्षा कार्यक्रमों में experiential lesson design, interdisciplinary planning, field-based pedagogy और authentic assessment को वास्तविक अभ्यास के साथ जोड़ा जाए।

डिजिटल तकनीक को गांधीवादी स्वावलंबन के विरोध में नहीं बल्कि उसके नए उपकरण के रूप में देखा जा सकता है, बशर्ते तकनीक विद्यार्थी को निष्क्रिय उपभोक्ता न बनाए। स्थानीय समस्या के डेटा विश्लेषण, डिजिटल कहानी, open educational resources, coding, design और community documentation में तकनीक सृजनात्मक भूमिका निभा सकती है। पर्यावरणीय स्थिरता और सामाजिक उत्तरदायित्व को परियोजनाओं का स्पष्ट आयाम बनाया जाना चाहिए।

16. समकालीन भारतीय कक्षा के लिए प्रासंगिकता

आज की भारतीय कक्षा विविध सामाजिक, भाषाई और आर्थिक पृष्ठभूमि वाले विद्यार्थियों से बनी है। अनुभवात्मक शिक्षा का एक ही मॉडल सभी स्थानों पर लागू नहीं किया जा सकता। ग्रामीण विद्यालय के लिए कृषि, जल, स्थानीय जैव-विविधता और ग्राम-जीवन सीखने के संसाधन हो सकते हैं, जबकि शहरी विद्यालय में परिवहन, कचरा प्रबंधन, बाजार, शहरी पारिस्थितिकी, स्थानीय उद्यम और डिजिटल सेवाएँ परियोजना का आधार बन सकती हैं। गांधीवादी विचार का सार किसी विशिष्ट शिल्प की अनिवार्यता नहीं, बल्कि शिक्षा को वास्तविक जीवन से जोड़ना है।

समावेशी शिक्षा की दृष्टि से अनुभवात्मक पद्धति उपयोगी हो सकती है। कुछ विद्यार्थी लिखित परीक्षा में अपनी क्षमता पूर्ण रूप से व्यक्त नहीं कर पाते, पर निर्माण, मौखिक प्रस्तुति, दृश्य अभिव्यक्ति, सहयोग या समस्या-समाधान में उत्कृष्ट हो सकते हैं। विविध शिक्षण-अनुभव उन्हें अपनी क्षमताएँ प्रदर्शित करने के अनेक अवसर देते हैं। यह तभी न्यायपूर्ण होगा जब गतिविधियाँ दिव्यांग विद्यार्थियों सहित सभी के लिए सुलभ हों।

उच्च शिक्षा में भी गांधीवादी प्रश्न प्रासंगिक हैं। बहुविषयक शिक्षा, internship, community engagement, field work और research projects को केवल क्रेडिट की औपचारिकता न बनाकर सामाजिक वास्तविकताओं से जोड़ना आवश्यक है। शिक्षक-शिक्षा में यह विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है क्योंकि भावी शिक्षक वही पद्धति अधिक प्रभावी ढंग से अपनाते हैं जिसका अनुभव उन्होंने स्वयं प्रशिक्षण में किया हो।

17. चर्चा

विश्लेषण से स्पष्ट है कि गांधी और NEP 2020 के संबंध को समानता और अंतर की साधारण सूची से नहीं समझा जा सकता। गांधी का मूल योगदान शिक्षा की ज्ञानमीमांसा को चुनौती देना था—क्या ज्ञान केवल पुस्तक में है या कार्य, समुदाय और अनुभव में भी? NEP 2020 इसी प्रश्न को आधुनिक शैक्षिक भाषा में competency, experiential learning, multidisciplinary learning और flexibility के माध्यम से संबोधित करती है। दोनों में सक्रिय शिक्षार्थी की छवि उभरती है।

आधुनिक शिक्षा में एक तनाव मौजूद है। एक ओर वैश्विक प्रतिस्पर्धा, तकनीकी दक्षता और रोजगार की माँग है; दूसरी ओर मानवीय मूल्य, स्थानीयता, स्थिरता और सामाजिक न्याय की आवश्यकता है। गांधीवादी दृष्टि यह स्मरण कराती है कि दक्षता का प्रश्न उद्देश्य से अलग नहीं है। विद्यार्थी तकनीकी रूप से कुशल हो सकता है, पर शिक्षा का व्यापक प्रश्न यह भी है कि वह अपनी क्षमता का उपयोग किस प्रकार करता है और समाज तथा प्रकृति के प्रति उसका उत्तरदायित्व क्या है।

NEP 2020 गांधीवादी विचारों के साथ संवाद की संभावना देती है, किंतु परिणाम कार्यान्वयन पर निर्भर होंगे। यदि experiential learning परीक्षा से असंबद्ध सहायक गतिविधि बनकर रह जाए, vocational education सामाजिक पदानुक्रम में नीचे बनी रहे, मातृभाषा के लिए गुणवत्तापूर्ण सामग्री न हो और शिक्षक को पर्याप्त तैयारी न मिले, तो नीति की समग्रता व्यवहार में सीमित हो सकती है। गांधी का पुनर्पाठ इसलिए नीति की प्रशंसा भर नहीं, बल्कि उसके क्रियान्वयन की आलोचनात्मक कसौटी भी बन सकता है।

18. निष्कर्ष

महात्मा गांधी की शिक्षा-दृष्टि और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बीच संबंध को समझने का सार्थक तरीका समान शब्दों की सूची बनाना नहीं, बल्कि शिक्षा के मूल प्रश्नों पर दोनों की दृष्टि को देखना है। गांधी ने शिक्षा को जीवन, श्रम, नैतिकता, स्थानीयता और स्वावलंबन से जोड़ते हुए पुस्तकीय तथा औपनिवेशिक शिक्षा की सीमाओं को चुनौती दी। नई तालीम ने यह स्थापित करने का प्रयास किया कि हाथ से किया गया अर्थपूर्ण कार्य बुद्धि का विरोधी नहीं, बल्कि ज्ञान और व्यक्तित्व-विकास का माध्यम हो सकता है।

NEP 2020 एक अलग युग की आवश्यकताओं के अनुरूप समग्र विकास, अनुभवात्मक अधिगम, बहुविषयकता, मातृभाषा, कला एवं खेल-समेकन, कौशल, व्यावसायिक शिक्षा और मूल्य-आधारित सीखने पर बल देती है। इन प्रावधानों में गांधीवादी शिक्षा से वैचारिक साम्य दिखाई देता है, किंतु नीति का दायरा डिजिटल, वैज्ञानिक, वैश्विक और संस्थागत आवश्यकताओं के कारण अधिक विस्तृत है। अतः NEP 2020 को नई तालीम की प्रतिलिपि कहना उचित नहीं होगा; दोनों के बीच सृजनात्मक संवाद देखा जाना चाहिए।

आज गांधी की प्रासंगिकता इस बात में नहीं है कि प्रत्येक विद्यालय ऐतिहासिक शिल्प-केंद्रित मॉडल को ज्यों का त्यों अपनाए। वास्तविक प्रासंगिकता उस सिद्धांत में है कि शिक्षा अनुभव से जुड़े, श्रम को सम्मान दे, ज्ञान को खंडों में न बाँटे, स्थानीय जीवन को सीखने का स्रोत बनाए और विद्यार्थी को समाज के लिए उपयोगी सृजनकर्ता के रूप में विकसित करे। सफलता इस पर निर्भर करेगी कि विद्यालय अनुभव को गतिविधि से आगे बढ़ाकर चिंतन, कौशल, मूल्य और समुदाय से जोड़ पाते हैं या नहीं।

इस प्रकार गांधी से NEP 2020 तक समग्र एवं अनुभवात्मक शिक्षा की अवधारणा में निरंतरता भी है और रूपांतरण भी। निरंतरता मनुष्य के बहुआयामी विकास, सक्रिय सीखने और जीवन से शिक्षा के संबंध में है; रूपांतरण आधुनिक विज्ञान, तकनीक, बहुविषयकता, वैश्विक संदर्भ और नई दक्षताओं के समावेश में है। भारतीय शिक्षा के लिए चुनौती इन दोनों को संतुलित करना है—जड़ों से जुड़ा हुआ, पर भविष्य के लिए सक्षम; स्थानीय अनुभवों से समृद्ध, पर व्यापक ज्ञान के लिए खुला; कौशलवान, पर मूल्यहीन नहीं; और शिक्षित, पर जीवन तथा समाज से पृथक नहीं।

संदर्भ

[1]. गांधी, एम. के. (1937/विभिन्न संस्करण)। बुनियादी शिक्षा और नई तालीम: शिक्षा पर चुनिंदा लेख। नवजीवन पब्लिशिंग हाउस।

[2]. गांधी, एम. के. (1947/विभिन्न संस्करण)। ग्राम स्वराज। नवजीवन पब्लिशिंग हाउस।

[3]. भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय। (2020)। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020। नई दिल्ली: भारत सरकार।

[4]. कुमार, के. (1993)। मोहनदास करमचंद गांधी। प्रॉस्पेक्ट्स: द क्वार्टरली रिव्यू ऑफ़ कम्पेरेटिव एजुकेशन, 23(3/4), 507–517।

[5]. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद। (2023)। स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा। नई दिल्ली: NCERT।

[6]. पानी, एस. पी., और पटनायक, एस. के. (2006)। शिक्षा पर विवेकानंद, अरबिंदो और गांधी के विचार। अनमोल पब्लिकेशन्स।

[7]. यूनेस्को। (1996)। लर्निंग: द ट्रेज़र विदिन (सीखना: भीतर का खजाना)। यूनेस्को।

[8]. महात्मा गांधी हेरिटेज पोर्टल। (तारीख नहीं)। बुनियादी शिक्षा और नई तालीम पर लेख। साबरमती आश्रम संरक्षण और स्मारक ट्रस्ट।

Cite this Article:

मिश्रा , विनोद कुमार & कल्याणी , लोहंस कुमार. *(2026). महात्मा गांधी की शिक्षा-दृष्टि से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तक: समग्र एवं अनुभवात्मक शिक्षा की बदलती अवधारणा. International Journal of Emerging Voices in Education, 2(7), 19–25.*

Journal URL: *https://ijeve.com/* ***DOI:*** *https://doi.org/10.59828/ijeve.v2i7.70*

Disclaimer/Publisher's Note: *The author(s) are solely responsible for the content and claims of this article. The publisher and editors assume no legal liability for any errors, copyright violations, or damages arising from its use.*